

ज्ज्ञानवापी मस्जदि वविाद

चर्चा में क्यों?

12 मई, 2022 को ज्ज्ञानवापी मस्जदि को लेकर वाराणसी कोर्ट ने एक महत्त्वपूर्ण फैसला सुनाते हुए मस्जदि के सर्वे के लिये नयुक्त कयि गए एडवोकेट कमशिनर अजय कुमार मशिरा को हटाए जाने से इनकार करने के साथ ही 17 मई से पहले ज्ज्ञानवापी मस्जदि के तहखाने का सर्वे कराने का आदेश दयिा है।

प्रमुख बदि

- यह प्रचलति मानयता है क् ज्ज्ञानवापी मस्जदि का नरिमाण सन् 1669 में मुगल शासक औरंगज़ेब ने प्राचीन वशिवेश्वर मंदिर को तोड़कर करवाया था। उल्लेखनीय है क् साकबि खाँ की पुस्तक 'यासरि आलमगीरी' में इस बात का उल्लेख भी है क् औरंगज़ेब ने 1669 में गवरनर अबुल हसन को हुकम देकर मंदिर को तोड़वा दयिा था।
- ज्ज्ञानवापी मस्जदि का मामला 1991 से अदालत में है, जब काशी वशिवनाथ मंदिर के पुरोहितों के वंशज पंडति सोमनाथ व्यास समेत तीन लोगों ने वाराणसी के सविलि जज की अदालत में एक मुकदमा दायर कर दावा कयिा था क् औरंगज़ेब ने भगवान वशिवेश्वर के मंदिर को तोड़कर उस पर मस्जदि बना दी इसलिये यह ज़मीन उनहें वापस लौटाई जाए।
- वही 18 अगस्त, 2021 को वाराणसी की ही अदालत में 5 महिलाओं ने माँ श्रृंगार गौरी के मंदिर में पूजा-अर्चना की मांग को लेकर एक याचकिा दायर की थी, जसिे स्वीकार करते हुए अदालत ने श्रृंगार गौरी मंदिर की मौजूदा स्थतिि को जानने के लिये एक कमीशन का गठन कयिा।
- इसी संदर्भ में कोर्ट द्वारा श्रृंगार गौरी की मूर्ति और ज्ज्ञानवापी परसिर में वीडियोग्राफी कराकर सर्वे रिपोर्ट देने को कहा था, जसिको लेकर हंगामा खड़ा हो गया है, क्योंकि मुस्लिमि पक्ष द्वारा सर्वे के लिये नयुक्त कयिे गए कोर्ट कमशिनर की नषिपक्षता पर सवाल खड़े कयिे गए थे।
- हट्टि पक्ष के वकील वजिय शंकर रस्तोगी ने कोर्ट में सबूत के तौर पूरे ज्ज्ञानवापी परसिर का नकशा प्रस्तुत कयिा है, जसिमें मस्जदि के प्रवेश द्वार के बाद चारों ओर हट्टि-देवताओं के मंदिरों का ज़किर है, साथ ही इसमें वशिवेश्वर मंदिर, ज्ज्ञानकूप, बड़े नंदी तथा व्यास परवार के तहखाने का उल्लेख है। इसी तहखाने के सर्वे और वीडियोग्राफी को लेकर वविाद खड़ा हो गया है।
- वही मुस्लिमि पक्ष का कहना है क् 1991 के धर्मस्थल कानून के तहत इस वविाद पर कोई फैसला नहीं दयिा जा सकता है।
- गौरतलब है क् उपासना स्थल (वशिष उपबंध) अधनियिम, 1991 की धारा 3 के तहत पूजास्थल, यहाँ तक क् उसके खंड को एक अलग धार्मकि संप्रदाय या एक ही धार्मकि संप्रदाय के अलग वर्ग के पूजास्थल में परिवर्तति करने को प्रतबिंधति कयिा गया है।
- इस अधनियिम की धारा 4(2) में कहा गया है क् पूजास्थल की प्रकृति को परिवर्तति करने से संबंधति सभी मुकदमे, अपील या अन्य कार्रवाइयों (जो 15 अगस्त, 1947 तक लंबति थी) इस अधनियिम के लागू होने के बाद समाप्त हो जाएंगी और ऐसे मामलों पर कोई नई कार्रवाई नहीं की जा सकती।
- हालाँकि यिदि पूजास्थल की प्रकृति में बदलाव 15 अगस्त, 1947 (अधनियिम के लागू होने के बाद) की कट-ऑफ तारीख के बाद हुआ हो, तो उस स्थतिि में कानूनी कार्रवाई शुरू की जा सकती है। अयोध्या के वविादति स्थल (राम जन्मभूमि-बाबरी मस्जदि) को इस अधनियिम से छूट दी गई थी।